शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2024
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

समाज में बढ़ती हिंसा और क्रूरता

डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

विज्ञान और तकनीक के विस्तार का वीभत्स रूप इन दिनों देश में दिखायी दे रहा है। कभी किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी इस सुंदर पवित्र भूमि पर स्त्रियों पर पाशविक अत्याचार किए जाएंगे। जिस भूमि पर मंत्र कहा गया है यत्र नार्यस्तु पूज्यंते तत्र रमंते देवताः वहां पर स्त्रियां इतनी असुरक्षित हो जाएंगी। हाल ही के दिनों में महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों को लेकर जो जानकारियां सामने आयी हैं, उससे मनुष्यता का सिर शर्म से झुक गया है। समाज का आज जो नैतिक पतन दिखायी दे रहा है, उसके लिए कौन जिम्मेदार है ? महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों को रोकने के लिए कठोरतम कानून बना दिए, उसके बाद भी महिला प्रताड़ना के मामले बढ़ते जाना किस बात की ओर संकेत करता है। क्या इस प्रश्न को कानून से हल किया जा सकता है? समाज के नैतिक उत्थान के लिए हमारे देश के महापुरुषों और विदुषियों ने कितना संघर्ष किया है यह किसी से छिपा नहीं है। महिला को निर्भयता पूर्ण वातावरण देने में पूरा समाज नाकाम रहा है। विज्ञान और तकनीक ने हमारे सिर बड़े कर दिए है और हृदय को बहुत छोटा कर दिया है। इस छोटे-से हृदय में करुणा और संवेदनशीलता मर गयी है। वहां राजनीति ने डेरा डाल दिया है। महाभारतकाल के बाद ऐसा पहला अवसर है जब शासन-प्रशासन मोहांध होकर स्त्री पर होने वाले अत्याचारों को मूक दर्शक बनकर देख रहा है। निर्भया कांड के बाद पूरे देश ने संकल्प लिया था कि अब ऐसी घटना फिर से नहीं होगी, परंतु यह सत्ताभिलाषियों का संकल्प था। उनके हृदय में स्त्री अस्मिता की रक्षा नहीं बल्कि सत्ताकांक्षा का समुद्र हिलोरें मार रहा था। उस निर्भया कांड के बाद न जाने कितनी निर्भया पर अत्याचार हुए परंतु कहीं से कोई मोमबत्ती जलाकर सड़कों पर नहीं निकला। कितनी महिलाओं के केश खोले गए, कितनी द्रुपदाओं का चीर हरण किया गया, परंतु कहीं से कोई अवतारी महापुरुष निकलकर सामने नहीं आया, जो अंबरावतार बनकर उनकी अस्मिता की रक्षा कर सके। कानून अपना काम करेगा, कहकर पल्ला झाड़ने वाले पूरे देश में मौजूद हैं। लाखों लोगों को अपनी प्रवचनों और तकरीरों से बांधकर रखने वाले संतों, महात्माओं, मौलानाओं के शब्द निष्प्राण हो गए हैं। नैतिक शिक्षा केवल अंकसूची की शोभा बढ़ाने का काम कर रही है, उसका आचरण से दूर-दूर तक नाता नहीं रह गया है। तकनीक के युग में साहित्य को शिक्षा से बेदखल कर दिया गया है। समाज के साहित्य से दूर जाने का परिणाम हिंसा और क्रूरता में परिलक्षित हो रहा है। लाखों के पैकेज की लालसा में यह देश ऐसी अंधी सुरंग में फंस गया है, जहां से निकल पाना आसान नहीं है। इससे पहले कि और देर हो जाए, समाज को समूची शिक्षा व्यवस्था अपने हाथ में लेकर स्वस्थ समाज के निर्माण में अपना योगदान देने के लिए तत्पर हो जाना चाहिए। इस शिक्षा व्यवस्था में नैतिक शिक्षा का मूल्यांकन अंकसूची से नहीं बल्कि समाज में व्यावहारिकता के धरातल पर होगा। समाज में साहित्य के तत्व को दाखिल करने से इस हिंसा रूपी दानवी पर लगाम लगायी जा सकेगी।